KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

इतिहास

भाग - 2

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 6

भक्ति-सूफी परंपराएँ

भाग - 4

Pritesh Joshi

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दुशाले के नए ताने-बाने: इस्लामी परंपराएँ

- प्रथम सहस्त्राब्दी ईसवी में अरब व्यापारी समुद्र के रास्ते पश्चिमी भारत के बंदरगाहों तक आए।
- इसी समय मध्य ऐशिया से लोग देश के उत्तर-पश्चिम प्रातों में आकर बस गए।
- 7 वीं शताब्दी में इस्लाम के उद्भव के बाद में यह क्षेत्र इस्लामी विश्व का हिस्सा बन गए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

शासकों और शासितों के धार्मिक विश्वास



- 711 ईसवीं में मुहम्मद बिन कासिम नाम के अरब सेनापति ने सिंध को विजित कर लिया।
- बाद में तुर्क और अफगानों ने दिल्ली सल्तनत की नींव रखी।
- समय के साथ दक्कन और अन्य भागों में भी सल्तनत की सीमा का प्रसार हुआ।
- इन क्षेत्रों में इस्लाम शासकों का स्वीकृत धर्म था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- मुसलमान शासकों को उलमा के मार्गदर्शन पर चलना होता था।

उलमा :- इस्लाम धर्म के ज्ञाता थे।

- शासन के धार्मिक व कानूनी और अध्यापन संबंधी जिम्मेदारी निभाते थे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

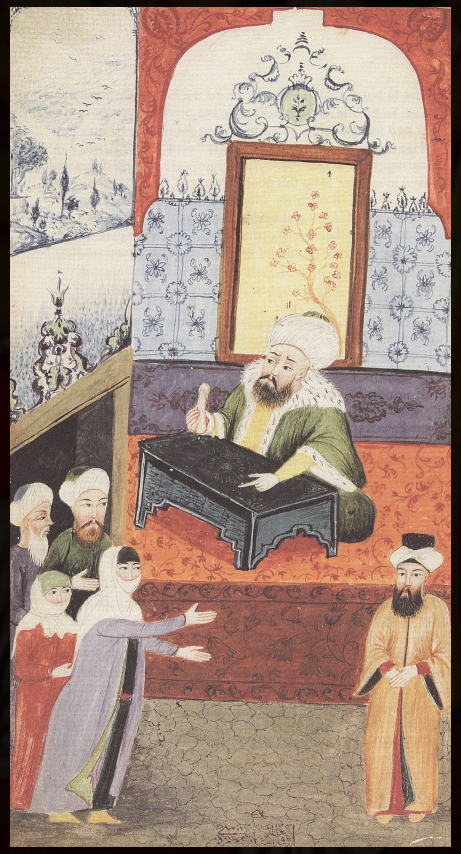

शरिया

शरिया मुसलमान समुदाय को निर्देशित करने वाला कानून है। यह कुरान शरीफ़ और हदीस पर आधारित है। हदीस का अर्थ है पैगम्बर साहब से जुड़ी परंपराएँ जिनके अंतर्गत उनके स्मृत शब्द और क्रियाकलाप भी आते हैं। जब अरब क्षेत्र से बाहर इस्लाम का प्रसार हुआ जहाँ के आचार-व्यवहार भिन्न थे तो क़ियास (सदृशता के आधार पर तर्क) और

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इजमा (समुदाय की सहमति) को भी कानून का स्रोत माना जाने लगा। इस तरह शरिया, कुरान, हदीस, क़ियास और इजमा से उद्भूत हुआ।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- उलमा से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे शासन में शरिया का अमल (पालन) सुनिश्चित करवाएँगे।
- किंतु भारतीय उपमहाद्विप में स्थिति जटिल थी क्योंकि यहाँ बड़ी जनसंख्या इस्लाम धर्म को मानने वाली नहीं थी।
- इस प्रकार जिम्मी अर्थात् संरक्षित श्रेणी का प्रादुर्भाव हुआ।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जिम्मी :- जिम्मी वे लोग थे जो उद्घटित धर्मग्रन्थ को मानते थे जैसे इस्लामी शासकों के क्षेत्र में रहने वाले यहूदी और ईसाई। ये लोग जजिया नामक कर चुका कर मुसलमान शासकों द्वारा संरक्षण दिये जाने के अधिकारी हो जाते थे। भारत में इसके अन्तर्गत हिन्दूओं को भी शामिल कर लिया गया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- वास्तव में शासक शासितों की तरफ़ काफ़ी लचीली नीति अपनाते थे। उदाहरणतः, बहुत से शासकों ने भूमि अनुदान व कर की छूट हिंदू, जैन, पारसी, ईसाई और यहूदी धर्मसंस्थाओं को दी तथा साथ ही गैर-मुसलमान धार्मिक नेताओं के प्रति श्रद्धाभाव व्यक्त किया। ऐसे अनुदान, अनेक मुगल बादशाहों जिनमें अकबर और औरंगज़ेब शामिल थे, द्वारा दिए गए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



खम्बात का गिरजाघर

यह उद्धरण उस फ़रमान (बादशाह के हुक्मनामे) का अंश है जिसे 1598 में अकबर ने जारी किया :

हमारे बुलंद और मुकद्दस (पवित्र) ज़ेहन में पहुँचा है कि यीशु की मुकद्दस जमात के पादरी खम्बायत गुजरात के शहर में इबादत के लिए (गिरजाघर) एक इमारत की तामीर (निर्माण) करना चाहते हैं;

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इसलिए यह शाही फ़रमान.... जारी किया जा रहा है.... खम्बायत के महानुभाव किसी भी तरह उनके रास्ते में न आएँ और उन्हें गिरजाघर की तामीर करने दें जिससे वे अपनी इबादत कर सकें। यह ज़रूरी है कि बादशाह के इस फ़रमान की हर तरह से तामील (पालन) हो।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लोक प्रचलन में इस्लाम

इस्लाम के आगमन के बाद जो परिवर्तन हुए वे शासक वर्ग तक ही सीमित नहीं थे, अपितु पूरे उपमहाद्वीप में दूरदराज़ तक और विभिन्न सामाजिक समुदायों–किसान, शिल्पी, योद्धा, व्यापारी के बीच फैल गए। जिन्होंने इस्लाम धर्म कबूल किया उन्होंने सैद्धांतिक रूप से इसकी पाँच मुख्य 'बातें' मानीं :

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1. अल्लाह एकमात्र ईश्वर है; पैगम्बर मोहम्मद उनके दूत (शाहद) हैं;
2. दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जानी चाहिए;
3. खैरात (ज़कात) बाँटनी चाहिए;
4. रमज़ान के महीने में रोज़ा रखना चाहिए
5. हज के लिए मक्का जाना चाहिए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

समुदायों के नाम

- हम अधिकतर हिन्दू और मुसलमान जैसे शब्दों को धार्मिक समुदायों का घोतक मान लेते हैं।
- किन्तु जिन इतिहासकारों ने आठवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य संस्कृत ग्रंथों और अभिलेखों का अध्ययन किया है वे इस तथ्य को उजागर करते है कि–

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इनमें मुसलमान शब्द का शायद ही कहीं प्रयोग हुआ है।
- लोगों का वर्गीकरण उनके जन्मस्थान के आधार पर किया गया था।
  - तुर्की मुसलमानों को तुरूष्क
  - तजाकिस्तान से आए लोगों को ताजिक
  - फारस के लोगों को पारसीक नाम से संबोधित किया गया था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- इन प्रवासी समुदायों के लिए एक अधिक सामान्य शब्द म्लेच्छ था।

मलेच्छ :-

यह बात को इंगित करता है कि ये वर्ण व्यवस्था के नियमों का पालन नहीं करते थे। और ऐसी भाषाएँ बोलते थे जो संस्कृत से नहीं उपजी थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

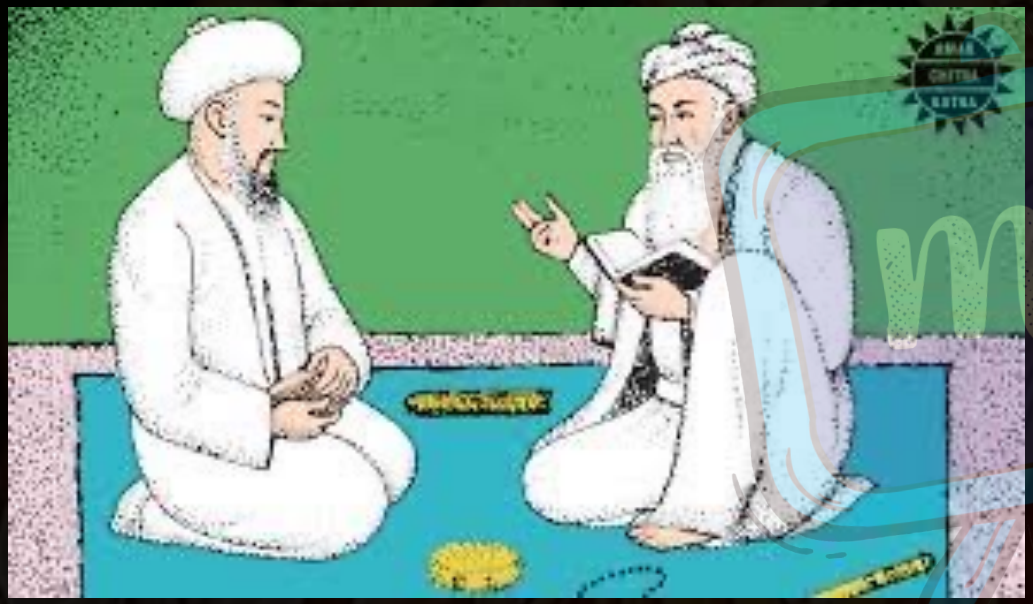

सूफ़ीवाद और तसव्वुफ़

सूफ़ीवाद उन्नीसवीं शताब्दी में मुद्रित एक अंग्रेज़ी शब्द है। इस सूफ़ीवाद के लिए इस्लामी ग्रंथों में जिस शब्द का इस्तेमाल होता है वह है तसव्वुफ़ (कल्पना, विचार, ख्याल)।

कुछ विद्वानों के अनुसार यह शब्द 'सूफ' से निकलता है जिसका अर्थ ऊन है। यह उस खुरदुरे ऊनी कपड़े की ओर इशारा करता है जिसे सूफ़ी पहनते थे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अन्य विद्वान इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सफ़ा' से मानते हैं जिसका अर्थ है साफ़ (पवित्र)। यह भी संभव है कि यह शब्द 'सफ़ा' से निकला हो जो पैगम्बर की मस्जिद के बाहर एक चबूतरा था जहाँ निकट अनुयायियों की मंडली धर्म के बारे में जानने के लिए इकट्ठी होती थी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सूफ़ीमत का विकास

- इस्लाम की आरंभिक शताब्दियों में कुछ लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की ओर झुकाव बढ़ा, इन्हें सूफ़ी कहा जाने लगा।
- इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान और सुन्ना (पैगम्बर के व्यवहार) की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- उन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- उन्होंने पैगम्बर मोहम्मद को इंसान-ए-कामिल (आदर्श मानव) बताते हुए उनका अनुसरण करने की सीख दी।
- सूफ़ियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।